८ (८०४)

1690

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक (१८४)

ग्रंथ नाम ज्ञानेश्वरीतील शब्दांचे अर्थ

विषय म० कोश.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥श्री॥

॥श्रीज्ञानेश्वरी॥अढदीपश्रप्रसंग॥

॥श्री॥राम

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

शाङ्कृबंस्न ॥ वेद ॥३॥	वर्पीवपु ॥ विकारादी ॥३	॥टव ॥ ॥स्वरूपा ॥४॥	॥स्वेव ॥ ॥क्रोदन ॥५॥	॥अंबर ॥ ॥वस्त्र ॥६
॥स्फुरप ॥ ॥वारीक ॥ ॥६॥	॥सउकार ॥ ॥अग्रभाग ॥५॥	॥वीसंवाद ॥मतांतरे ॥ [illegible]	॥खंडित ॥ ॥अथी ॥१४॥	॥सुविमल ॥ ॥नीर्मळ ॥१४
॥उन्मेख ॥ ॥ज्ञान ॥१५॥	॥नीकुंभ ॥ ॥गंडस्थळे ॥१६॥	॥दिंभ ॥ ॥हस्ती ॥ ॥१७॥	॥मकरंद ॥ ॥पुष्प ॥ ॥सुवास ॥ ॥१८॥	॥आदिबीज ॥ॐकार ॥ ॥२०॥

१

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

चगाहिनि॥ ॥स्नानीच्छु	ब्भीवंद्दि ला। नमस्कारील ॥२७॥	॥ब्भीकासी ॥ला॥ प्रार्थिकाच्छु	॥उधान ॥बाग॥ ॥२८॥	सुधाब्धि ॥अंमरत ॥२९॥
॥वसीष्ट॥ ॥वरीष्ट॥ ॥३०॥	अवीस्कतोनि प्रवेशोनी॥ ॥३२॥	उस्वतीया ॥थोरपडला॥ ॥३३॥	शब्दश्री॥ शब्दशोभा ॥३४॥	शारंगश्रीके॥ ॥ उलेसराग्न ॥३५॥
वीसुन्न॥ आपालेपण ॥३६॥	बीक॥ आधीकय ॥३७॥	आपाडे॥ आधीकप ॥३८॥	पातले॥ प्राप्तजाले ॥३९॥	सानिव॥ लाहापाप पा॥ ॥४०॥

2

(2)

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥श्री॥

नीवडले॥ नीपाले॥६४	नीरावधी आवधी॥ ॥६५॥	नवनीत॥ भगीनाम॥६६॥	फडसीले॥ वीचारीले॥ ॥६७॥	पारंगति॥ पार पावले॥ ॥६८॥
तत्वंग॥ लाहाणे॥ ॥६९॥	॥हा॥ गीतोपदे॥ ॥७०॥	अनुराग॥ प्रीति होय॥ ॥७१॥	आधीत्या॥ भाग्याचा॥ ॥७२॥	॥कवळु॥ ॥बोलु॥७३॥
उपनला॥ ॥उपजला ॥७४॥	वीस्फुरे अन्यथा होय ॥७५॥	आपाडु॥ आत्मकप॥ ॥७६॥	वीवरी॥ वीचारी॥ ॥७७॥	चमत्कारीती॥ संतोष होउनि ॥७८॥
सधरु॥ सामर्थ॥ ॥७९॥	आधी॥ आडे॥ ॥८०॥	भारती॥ सरस्वति॥ ॥८१॥	दारयंत्र॥ काष्टाची पुतळी॥ ॥८२॥	झडकरी॥ लवकरी॥ ॥८३॥

3

(५)

स्नेहे॥ प्रीति॥ ॥८७१	धर्मीलयप॥ ॥चरा॥ ॥८८४॥	॥व्याजेप॥ ॥मीसे न्डुप॥	सादुकला प्रद्दिसुजाला ॥९०॥	उथवलाप॥ उगवलाप॥ ॥९०॥
परीकर प्रखरप॥ ॥८७॥	आवगमले दुढभारा॥ ॥८७॥	माने॥ भव[illegible] ॥८[illegible]	घंटात्तेप॥ सतुदाय ९२	कुरटाप रगतुणा ९६
वीकांचू पराक्रमी १००	आड दृत्त भय१०५॥	धा[illegible]त्रा ब्रंह्म १०८	अप्रतिमत्व सर्वीवरीष्ठ ॥११०॥	आत्दाते॥ आनुसराते ॥११०॥
सुमटासि पुष्पसातीप ॥१११॥	पाउ॥ आधीकेस ॥११२॥	कुव्वकनी कुराव्वना ११३	कैलेप पुष्यप ११३॥	कीर्तिप येबप ११३॥

(१)

॥२॥

पा॥

॥अवधा॥

पंन्नास लेा॥ र्चीटलेा॥ ११६५॥	॥धूकुलेा॥ ॥धोडे॥ ११६५॥	दुवाडपन दुस्तरवलरवे ना ११७	वीरज्ना साडे॥ ११७	वीरीचीलेनीफाडे आमुचे सैन्याचु नीधोडे ११८
बधु॥ दोडगा १२०॥	आरणी रक्षणि १२२॥	वरगाणि॥ वाटाणि १२२	अउपजतअसे॥ वादल १२६	॥नुलंगा ग्रतिध्वनी १२७॥
धावे॥ बळे॥ १२८	धाकडासि बळकटपीळा चे॥ १३१॥	॥गावा॥ ढाल॥ १३२	वीसनैले वीसनले। १३३॥	काचया अधीर १३४
आंगनेचे पुढलोरेना १३४॥	रातुर॥ वाघ॥ १३५॥	बंबाळ॥ माळनाद १३६॥	कांतले॥ नीमीपा॥ १३८॥	रहुवर॥ रयस्त्रेष्ट॥ १३९॥

५

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

वेबाक५। सलुडाय५। १७६५	वीसनला। वासनला १७८	आंत्तक५। यन१८०५।	गजबजीला। भीउनराहिला। १८०५	आसुउलं नीघोपाशात्त १९६५
माकवचादि स्वस्तानसाग १९७५	आदिपुरुष भगवान५ १९९५	चंदाच्यात समुदायात १९२५	हीये५। हृदय १९३५	दुनवटोन येकः चास्ते १९५५
हूंडी। हादींडि। १९६	वाटीव पुरुषार्थी (१७२)	पाडेयीन योपलवोव १८७	शीथी मास्त१८८	आया आकारास २३०
आनकुवीत नीरुपद्रव २२६	वस्तोटा५ वस्तीस्थाने २२८	सकोनेयसि टकितासि २३२	कीडावरवोटे५ स्वादे २३३॥	हीये५ हृदय २३४

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

अंधकुप नीजेळकुप २३९	पारुषत्ति ॥ राळाति २८६	आडवीजे ॥ आडुळीजे २८७	ढाकत्ति ॥ राळाति २४५	वोवाडत्ति च्युतहो… २५०
पात्तवे ॥ राहे ॥ २८४	वानचसे घराचीवचचनी २८८	उगाउ उकलु ॥ २५१	सुदले ॥ पाडिले ॥ २५४	उपडुतु… वळीज…
इतिप्रथमोध्या यः समाप्तीः ॥ १५	श्री॥श्रीश्रीश्री	[illegible]ापितम्	॥ ५५ ॥ ५ ॥ ५ ॥	५ ॥ ५ ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

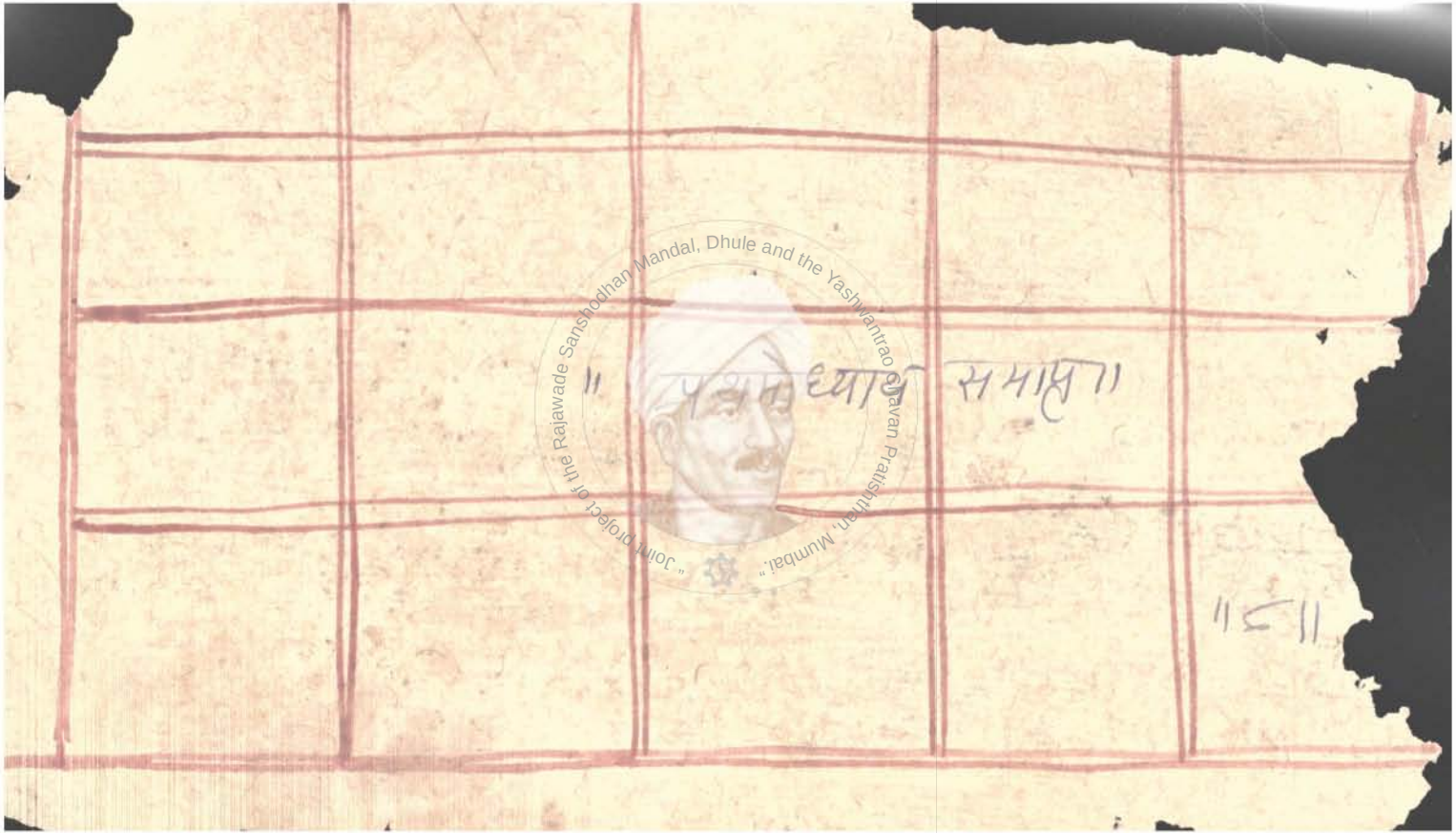

॥ प्रथमाध्याय समाप्त॥

॥८॥

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

पष ।।अ।।आ

उपनले ।। उपजले ।।५।	वीरमले ।। वीराले ३।।	आदि पहीले ६	मावो आश्रय ।।४।	लोभपण सुरल४।	आवो आकार ४।
पाडे ।। झोंम्पैता ।।१९।।	पौरुषत्व पुरुषार्थ ।।१८।।	आपाडु ।। आचटीत ।।१६।।	आसुनी आत्ता ।।१७।।	स्तन ।। कडापीनेको ।।१५।।	अपभ्रंशो ।।नाशकुबा ।।२०।।
व्याजे ।। मीस २१	आथी आहे २३।।	उपनले उपजले २२	आदि केसि ईदु लोकेसि ।।२६।।	डीलेपन अधीरत्व ।।२८।।	पतन ।। अध:पात २७।।
प्रमादु ।। अज्ञान ३१।।	लींगभेदु लींगनाशेजी लीं।।३२।।	गुरु शीष्य ३४	वीरु ।। वीरुध ।। ३५।।	आळस्या सामान्य ।।३६।।	मान परीमान ।।४०।।

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

पीकरवील ॥ वीकारनपावे ॥५१॥	कीर नीश्चये ॥५२॥	नीरवीथी नीश्रीम ॥५३॥	दुर्भर ॥ दुर्घट ५४	सधर ॥ आधीकपयेत ५५	वर ॥ श्रेष्ट ५६
नवनिर्षत्ति पाज विले ॥ ॥५७॥	वारी बाण ५८	पावरोन घालोन ५८	उपपत्ति युक्ति ५९	वीरु ॥ वीरुध ६०॥	व्याजे मीसे ॥ ६१
त्रीमीरावरोध ॥ नेत्ररोगत्रास ६२	पासी ॥ जवळ ६३	वीर ॥ गुरु ॥६४॥	नवीत्तळति नउगवलि ॥६५॥	आहाच्छलि हुरपळली ॥६६॥	सिंचली उदकघातली ॥६७
उज्जीवन ॥ आप्पसाधने ॥६८॥	कारुण्य ॥ कृपा ६९	कळीरी कमळी ७०	भाजचीना । शामचीना । ७१	जशी ॥ आहुत्तेरी ७२	प्रोढी थोरपण ७३

१७॥

१७॥

१०

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

आवळीला सहजे ७३	कवळुनी॥ वळुनी ७४॥	ग्रीष्म॥ उष्णकाळ ॥७५॥	आचळ॥ पर्वत ७६॥	सुनीळ॥ मेघःश्याम ॥७७॥
आईति॥ राज्ञ ७८	उन्मेख ज्ञान॥७९	आरानुक सावधान ॥८०॥	कुळीतु॥ व्याकुळ ८१॥	सरवडु॥ दुःखीत ८२॥
आळवावे समजनुक ८३॥	ठुवा॥ क्षण ८४	वीना॥ आंगीकारी ॥८५॥	नीरवधी उत्तम॥ ८६॥	वीचरीलु॥ वीचारीलु॥ ८७
सराख॥ सक्रोध ८८	थाकले उस ८९॥	आथी॥ आहे॥ ९०	आशाचा वरच्यावर॥ ॥९१॥	बावसी उदास ९२॥

99

Courtesy of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

	सेना। भक्तिकडे ११६३५	स्थीति। पालन ९४॥	भ्रंशो। जाये १०४॥	आत्मवीति। बुडविति। ११२५	व्यासी व्यापकपण ११४१	
२॥	सुवरव। सुंदर १६	आपभ्रंषु। भ्रष्ट ११८	आवेष्टीत लाग ११२५	क्रीडाच हीन १२८	आयनी। सामर्थ्य १२४५	॥२५
	नीष्कर्ष सीधांत ११२५	ब्रंह्लवंध्य। थ॥ ब्रह्मरूप ११६	आपज याते ११९	आपैस्ते सहज १८२	नाल्पदेव बुडेना १८६	१२
	नसंभवे जळेना। १८६	नप्रभवे शुष्कनोहे १८६	आपुनोडे सयनोडु १८८	आवीकृतु वीकाररहीत १९६	अंत्तवंत। नाशिवंत १९२	

श्रोते

अनुश्रुत आरवंड १९३॥	अपरीहुर अनीवार १९८	पढीयासे दीसे १९७॥	आवीट॥ आरवंड॥ १९९४॥	सुनी॥ लाजनी॥ १७१
उपरति वीरक्ती १७२	नीरवधी असंतनीशीम १७३	सुद्दले कवळ १९८	नाडवीजे आडफीजे १७७	पतिकरे॥ अंगीकारे॥ १९३५॥
पडीभरे॥ आधीक्षप॥ १९३॥	आर्त्ति॥ प्रीति॥ १९३	आह्वान व्दर्यात १९६	धाडीले॥ गमावीले १९७॥	अभीशाप नीं द्धाकारी १९८
उपद्रुति पराभव १९९	आभीभवीजे पराभवीजे ॥२००॥	चरपडा प्रासी २०१	गत्ति॥ पलायन॥ ॥२०३॥	नमनेल नकच्छेपचास पतित्त २०३॥

73

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥३॥

वीपाय॥ कडाचील ॥२०६१॥	नीगाचालासी॥ माघारा २०६॥	वाडजाले बलकज्जाले २११॥	कुठी नीद्रा २१८	आनकुलीत सडुजस्मानया गसी॥२२०॥
आंम्रले॥ दुग्ध २२८	मुकुलीत॥ संक्षीसुमाक ली॥२३०॥	आकुंचीत नीश्चीत॥ २३२॥	थकुले॥ लाहान २३२॥	ननीरांक्षीजे नईछीजे॥ २३६॥
आपुलीय॥ नीसक्रीय॥ २३५॥	नीरवधी॥ आवधनाही २३५	आकुंचनसंक स्वाधीननकी ल॥२३४॥	थकुटी॥ लाहान २३८	लानी॥ प्राप्य २४२॥
वीकरति वीशयाकार २४३॥	॥हस्त॥ प्राप्तनाहि २४४	आभीभुतु वस्या॥ २४८॥	धाउीत्ति॥ इवडीत्ति २५४	आरतल व्यापीले॥ २५६॥

॥३॥ १८

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

आरोषण सर्वे २७२	टाक शाहे २७१	आपरीत्तोषे आसंत्तोषे २७१	सगुणा पुर्ण २७०४	कर्मरेषा कर्मसाध्य २७५
परांगत्त प्रासुसीधी २७७	नीरामय नीरवीन्ध २७१४	पारुशेत्ना दाहीलगा २८२	उन्मखे संतोष २७६	भुंजे भोगी २८८
वीलसे शोभे २७९	प्राज्ञुम बुधीवंत २७३४	आगे ईद्र २८७	आउपेजेना आडना २८८	आन्नवीधीन्न व्यापक २८८
नभीभवे नागवा २९१	उवाईला उघाईला ३०२	रस्सुटे रस्तनिघडे ३०५	आयाम आकारासी ३०१	थायवलाटाय आसमर्थी नाहे

९५

सतंतु॥ स्वाधीनता हे ३१८५	उपनला उपलला ३२८	समाळेा। मायमाळेा। ३२१५	आहातप आस्हलेतेप ३२३५	आलसवीजेप बुडविजेप ३२८
नेव॥ आंधळपने ३२१	वीपाये कडाचील ३२१	यतने येवडे ३२८५	नीभीनु आधीनु ३३३॥	आलुवीजे बुडवीजेप ३३५५
कुउसनी वीचार ३४१	दुरावती जोवरा ३४८	ईषत थोडे ३५६	आधृति आधीर्य ३५१	पाबळेप तुच्छ ३५२
पालीवना पर्यरिणला ३६२५	दवडोनी जीनोनी ३६६	उवाईलाप सुखीजाला ३७२५	ईतिशब्दापया वो॥ज्ञानेश्वरी ॥२८॥२८॥	हीतियोध्या:५२ समास श्रीराम॥ २८॥ २८॥

मग्ग॥

॥ग्य॥

७८

छा॥२८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥ २८॥

"Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

नीके॥ चोरवठ ।३॥	यसनी॥ यसमई ।।४॥	त्रंषु॥ नाष॥ ।।७५॥	वारूनी करूनी॥ ।।७॥	सुये॥ चालुनी ।।८॥
सुवीजे॥ चालीजे ।।१५।	नवाई॥ थोर नवल ।।१४॥	गावाई हास्य॥ ।।१४॥	आनुसरली या॥ शरण आलीया॥ ।।१४॥	वाटंगावे वीस्वासावे ।।१२॥
कीरंसीध्वये ॥नीश्चये॥ ।।१७॥	ध्वनीते॥ संक्षीपे॥ ।।१६॥	आवगमीतां वीचारीत्तां ।।१६॥	म्हाया स्पष्टं॥ ।।१७॥	आपैते स्वाधीन ।।२२॥

॥१॥

गकावे॥ पावावे॥ ॥१२४॥	मागील्या॥ धावतवोल्या ॥१२७॥	सवेग्या॥ स्वईछा॥ ॥१२६॥	पाहाल्या जाल्या॥ ॥१२६॥	आभीप्राव आर्थी॥ ॥१३२॥
ध्वनीत॥ संक्षीस॥ ॥१३२॥	मऊच्क्रे॥ गबाल्लत्या॥ ॥१३०॥	सोरवी॥ त्नानी॥ ॥१३६॥	येकु॥ येरू॥ ॥१३७॥	नीपुण पुर्ण॥ ॥१३७॥
नीवीण॥ मोक्ष॥ ॥१३७॥	गवचे॥ चीत्तशुध॥ ॥१३७॥	नीष्कर्म॥ कर्महिन॥ ॥१८६॥	व्यसन॥ कार्य॥ ॥१८७॥	नीरार्त्तता॥ नीरास्ता॥ ॥१८६॥

॥२१॥

१८

नैष्कर्म्य ब्रंस्त ॥६०५	आपादिले आरंभीले ॥६०६॥	सैरा॥ व्यर्थ॥ ॥६२५	परतंत्रा॥ पराधीन ॥६०५	नीष्कर्म॥ ब्रंस्ननीष्ट॥ ॥६३२॥
फुडे॥ ॥खरे॥ ॥६६३॥	गुढ॥ गुप्त॥ ॥६६८॥	नसिंपे॥ भीजेना॥ ॥७९१॥	सोय॥ मार्गकळेना॥ ॥७३७॥	चीत्रोषीजे॥ धारहनपाल ॥७३५॥
नसंभवे॥ नघडे॥ ॥७७५॥	हुतु॥ अहंकार॥ ॥७७५॥	परतंत्रा॥ पराधीन॥ ॥८०१॥	मुलला॥ मुळला॥ ॥८०६॥	संस्था॥ ॥प्रकार॥ ॥८०४॥

१९

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

साकाक्षे काम्यकर्म ॥१०॥	परीत्तोषु संत्तोषु ॥ ॥६४॥	स्नपीये अेल्लतरा हात्तिल ॥ ॥६६॥	काढत्त ॥ धावत्त ॥ ॥१०१॥	आनर्षे सुखी ॥१०२॥	नीरत्त ॥ असंत्तरत्त ॥ ॥१०३॥
सुरी ॥ देवी ॥ १०७॥	आपीले सामर्थे ॥१०७॥	आपाव नाथ ॥ १०८॥	नीजरति आपस्व धान [illegible]	नीरत्त ॥ समुर ॥ १०८॥	प्रहरहो उसति ॥ १३५॥
वरीषुपा परजन्य ॥१३५॥	व्याक्षिर अंलु ॥ १३६॥	अंलबद अल्लरूप १३६॥	मुर्त्ति ॥ प्रानि ॥ १३७॥	आधीपास नाहापे ॥ १३७॥	राकुलु ॥ यल्लु ॥ ॥१३८॥

॥२॥ ॥३॥ 20

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

अजेचे। सेवीचे। ॥११८९॥	वाघआले॥ प्रवाह॥१८८	वासंडावे। सांडावे १८७	नसीं पे। नलीपुर्वा १८६	अनुसरले। अंगीकारले ॥११९०॥
केवल्य॥ ॥मोक्ष १९१	वाजे उमजेबरव कारे॥११९७॥	साकांक्ष॥ मारीगरवे १९४	बरवा। भ्रांत १९३॥	आथीला। संपन्न १९८
सवीशेष॥ आवश्यकता वे॥११९८॥	स्वछता। सहज॥	आनुपरोध यथार्थ ॥११९४॥	आर्थवाद स्तुतिमान ॥११९६॥	पाहाले उजेडले॥ ११९७॥
लाहाति॥ लागति॥ ॥१२००	उधवला आधीकजाला ॥१२०४	[illegible] पाहावा ॥१२०८॥	आपजैल उपजेल॥ ॥१२१०॥	सांकडे॥ कठीण ॥१२१६॥

29

Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

॥१७॥

हुवाहु वाइटि॥ ॥२२२८॥	उभयेला इहिलोकपर लोक ॥२२९	॥फीर॥ नीश्चयें॥ ॥२३०॥	स्थीति॥ स्वभाव॥ २३२॥	आसत्तासंगु नीरासपण २३५
संसर्ग॥ प्रीति॥ २३५	चुकवीति गर्वीति॥ २३६॥	सर्ड्जाति॥ घालीजेति १३८॥	बीवस्तीम बाधका ॥२३७॥	गीवसी धुंडी २३५
धोंडे। दुष्ट ॥२४२	खोट उन्माद ॥२४२॥	दीवंडे अघात २४२॥	बीक। आधीक्य ॥२४८	ओस्प। स्वर्ईखने ॥२४९

॥१७॥

22

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com